

# पर्यावरण के लिए वरदान. कोरोना महामारी

(Covid-19)

डॉ. तारा देवी

सहायक प्रवक्ता, हिन्दी

फतेहचन्द महिला महाविद्यालय, हिसार

E-mail: [rohantara1986@gmail.com](mailto:rohantara1986@gmail.com)

## शोध-सारांश

पर्यावरण शब्द 'परि' उपसर्ग के साथ 'आवरण' शब्द के संयोग से बना है। 'परि' का अर्थ है— चारों ओर या इर्द-गिर्द की परिधि। 'आवरण' का अर्थ है— आच्छादन, किसी वस्तु पर लपेटा गया वस्त्र तथा घेरा आदि। मानव हो या अन्य जीव-जन्तु सभी पर्यावरण की ही उपज हैं। उनकी व्युत्पत्ति, विकास यहां तक कि वर्तमान स्वरूप ही नहीं, बल्कि भावी अस्तित्व भी निर्धारित करना पर्यावरण की परिस्थिति पर ही निर्भर रहता है। क्योंकि पर्यावरण से अभिप्राय उस वातावरण से है, जिसमें समस्त जगत विचरण करता है। पर्यावरणविद् मानते हैं कि कोरोना वायरस के संक्रमण ने पूरी दुनिया को ठहरा दिया। कोरोना हमारी जीवनशैली का परिणाम है। हमने जैव विविधता को मिटाने के क्रम में खाद्य-अखाद्य का फर्क मिटा दिया। इतिहास गवाह है कि अतीत में जब-जब इस प्रकार की भयानक महामारी आई है, तब-तब पर्यावरण ने सकारात्मक करवट ली है। सत्य है कि कोरोना संक्रमण काल प्रकृति के लिए ही नहीं, मानव के लिए भी क्षणिक राहत वाला है।

**कुंजी शब्द:** पर्यावरण, वरदान, कोरोना, महामारी

### 1.0 पर्यावरण शब्द का अर्थ :

पर्यावरण शब्द 'परि' उपसर्ग के साथ 'आवरण' शब्द के संयोग से बना है। 'परि' का अर्थ है— चारों ओर या इर्द-गिर्द की परिधि। 'आवरण' का अर्थ है— आच्छादन, किसी वस्तु पर लपेटा गया वस्त्र तथा घेरा आदि। अंग्रेजी भाषा में पर्यावरण को 'Environment' कहते हैं। 'Environment' शब्द अंग्रेजी शब्दों Environ + ment से मिलकर बना है। यहाँ Environment का अर्थ To encircle अर्थात् घेरना है तथा ment का अर्थ from all sides चारों ओर से घेरना है। पर्यावरण व Environment दोनों ही शब्दों का शाब्दिक अर्थ 'चारों ओर से घेरना' है। यहां पर्यावरण बाह्य आवरण का द्योतक है।<sup>1</sup>

### 2.0 उद्देश्य:

1. पर्यावरण को परिभाषित करना।
2. कोरोना महामारी (Covid-19) का अनुसंधान करना।
3. कोरोना महामारी के सकारात्मक पक्ष को उजागर करना।

#### पर्यावरण के घटक

अजैविक घटक (निर्जीव घटक)	जैविक घटक (सजीव घटक)
<ul style="list-style-type: none"> <li>● स्थलमण्डल</li> <li>● जलमण्डल</li> <li>● वायुमण्डल</li> </ul>	<ul style="list-style-type: none"> <li>● पेड़-पौधे (उत्पादक)</li> <li>● जीव-जन्तु (अपघटक-उपभोक्ता)</li> </ul>

**2.1 अजैविक घटक (निर्जीव घटक)**— अजैविक पारिस्थितिकी तंत्र का एक प्रमुख घटक है। पारिस्थितिकी तंत्र में उपस्थित सभी गैर जीवित (निर्जीव) चीजें शामिल हैं। निर्जीव भौतिक और रासायनिक तत्व अजैविक घटक से संबंधित हैं। अजैविक घटक सूर्य के प्रकाश, ऑक्सीजन, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन, फास्फोरस, तापमान, पानी, मिट्टी, खनिज, अन्य गैस, लवणता, आर्द्रता, वायु आदि हैं।<sup>2</sup>

● **स्थलमण्डल**— पृथ्वी का सूखा भू-भाग स्थलमण्डल कहलाता है। समस्त भू-मण्डल का लगभग 29% भाग स्थलमण्डल है। स्थलमण्डल का गठन एक गर्म पदार्थ के रूप में लगभग 4.6 बिलियन वर्ष पहले हुआ था। लगभग 3.2 अरब साल पहले पृथ्वी काफी ठण्डी हो गई और अद्भुत घटना घटित हुई। स्थलमण्डल के 92 तत्वों में से केवल आठ क्रस्टल चट्टानें ही आम घटक हैं। इन घटकों में होती

47% ऑक्सीजन

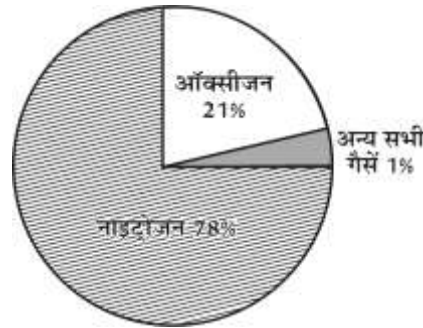
भूपृष्ठ की मात्रा

डॉ. तारा देवी : - पर्यावरण के लिए वरदान. कोरोना महामारी

- 28% सिलिकॉन
- 8% अल्युमिनियम
- 5% आयरन

● **जलमण्डल**— वेदों में जल को जीवन के लिए आवश्यक तत्त्व निरूपित करते हुए, इसे देवता माना है। पृथ्वी के जल का भाग जलमण्डल कहलाता है। यह पृथ्वी के वायुमण्डल और स्थलमण्डल में व्याप्त है जिसे जल क्षेत्र या जल-स्थल भी कहते हैं। वायुमण्डल में जल अपनी तीन भौतिक अवस्थाओं में मिलता है— (1) गैस के रूप में वायुमण्डलीय जलवाष्प, (2) तरल के रूप में जलाशयों, वर्षा की बूंदों, ओस (3) ठोस रूप में हिम तथा ओले। स्थलमण्डल में यह दो रूपों में मिलता है। (1) ठोस रूप में पर्वतों तथा ध्रुवीय प्रदेशों में जमी बर्फ, (2) तरल रूप में नदियों, झीलों, तालाबों, समुद्र आदि का जल। यह पृथ्वी की सतह के नीचे मृदा जल के रूप में उपस्थित रहकर स्थलीय पादपों को जल प्रदान करते हैं। कुओं और ट्यूबवेल का जल सतह जल के उदाहरण है।<sup>3</sup>

● **वायुमण्डल**— पृथ्वी के चारों ओर विभिन्न प्रकार की गैसों का एक आवरण पाया जाता है जिसे वायुमण्डल कहते हैं। वायुमण्डल पृथ्वी पर एक सुरक्षा कवच का निर्माण करता है। इसका विस्तार समुद्र तल से लगभग 16 से 29 हजार कि.मी. के बीच मापा गया है। इस मण्डल का प्रभावी भाग लगभग 29 कि.मी.



की ऊँचाई तक ही माना गया है। वायुमण्डल के गठन में अनेक गैसों पाई जाती हैं जिसमें प्रमुख हैं— ऑक्सीजन, कार्बन-डाई-ऑक्साइड, सल्फर व नाइट्रोजन, हाइड्रोजन, ओजोन आदि।<sup>4</sup>

**2.2 जैविक घटक**— जैविक शब्द जीवित जीव या सजीव को दर्शाता है, अतः पारिस्थितिकी तंत्र के जैविक घटक पेड़-पौधे एवं जीव-जन्तु (उत्पादक, अपघटक-उपभोक्ता) ये पर्यावरण तत्त्व आपस में अन्तःक्रिया करते हैं। इसमें होने वाले परिवर्तनों का प्रभाव व्यापक होता है। जीव-जन्तु व वनस्पतियों में निरन्तर समायोजन संबंधी परिवर्तन होते हैं। जिसका प्रभाव जैव तत्त्वों, मृदा, जल स्रोत, स्थल विकास सभी पर पड़ता है। अजैविक घटक-जैविक घटकों के साथ आपसी अन्तःक्रिया द्वारा पर्यावरण सन्तुलन बनाए रखते हैं।<sup>5</sup>

● **पेड़-पौधे (उत्पादक)**— इसके अंतर्गत हरे पेड़-पौधे, कुछ जीवाणु, शैवाल आते हैं। जो सूर्य प्रकाश की उपस्थिति में प्रकाश संश्लेषण की क्रिया द्वारा सरल अजैविक तत्त्वों से अपना भोजन स्वयं बनाते हैं।

● **जन्तु (उपभोक्ता)**— वे जीव जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्पादकों का भक्षण करते हैं। इसकी तृतीय श्रेणियां हैं —

1. प्राथमिक उपभोक्ता— इसमें शाकाहारी जीव शामिल हैं जो हरे पौधों से प्रत्यक्षतः भोजन प्राप्त करते हैं। जैसे— गाय, हिरण, खरगोश आदि।
2. द्वितीय उपभोक्ता— इसमें मांसाहारी जीव शामिल हैं जो शाकाहारी जीवों या प्राथमिक उपभोक्ता को खाते हैं। जैसे— बिल्ली, लोमड़ी, मेढक आदि।
3. तृतीय उपभोक्ता— जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इन सभी का भक्षण करते हैं। जैसे— शेर, बाज, गिद्ध आदि।

● **जीव (अपघटक)**— ये अन्य परपोषी जीव हैं, जिनमें प्रमुखतः बैक्टीरिया तथा कवच होते हैं। ये अपने पोषण के लिए मृत कार्बनिक पदार्थ पर निर्भर रहते हैं। ये मृत उपभोक्ताओं को साधारण भौतिक तत्त्वों में विघटित कर देते हैं, जो फिर से वायुमण्डल में मिल जाते हैं।<sup>6</sup>

### 2.3 कोरोना महामारी (Covid-19)

पर्यावरणविद् मानते हैं कि कोरोना वायरस के संक्रमण ने पूरी दुनिया को ठहरा दिया। इसका समर्थन आधुनिक विज्ञान ने भी किया। कोरोना— हमारी विलासी जीवनशैली का परिणाम है। हमने जैव विविधता को मिटाने के क्रम में खाद्य-अखाद्य का फर्क मिटा दिया। चमगादड़ और पैंगोलिन जीवों के भक्षण वाली तमाम प्रवृत्ति ने कोरोना के रूप में पृथ्वी के साथ इंसानी सभ्यता का बेड़ा गर्क करने का काम किया है। अब आलम यह है कि इबोला—निपाह जैसी 70 फीसद महामारियों का स्रोत वन जीव बन रहे हैं। हमने उनकी सीमा में दखलंदाजी की और नतीजा सामने आया।

डॉ. अलका गुप्ता— प्रकृति के ऊपर आधिपत्य स्थापित करने का हमारा आत्मघाती प्रयास है। हम यह भूल गए हैं कि हमारा अस्तित्व प्रकृति से है, प्रकृति का हमसे नहीं। वो चाहे तो सम्पूर्ण आर्थिक समृद्धि एवं विकास को एक झटके में छोटे सूक्ष्म जीवों द्वारा मिटा सकती है। मनुष्य और प्रकृति के बीच का संबंध युगों से है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

हे धरती मां, जो कुछ भी तुमसे लूंगा,  
उतना ही तुझे वापस करूंगा।  
तेरी जीवन शक्ति, सहन शक्ति पर,  
कभी नहीं आघात करूंगा। (अथर्ववेद)<sup>7</sup>

जहां कोरोना वायरस (कोविड-19) के कारण मानव जीवन बुरी तरह अस्त-व्यस्त एवं प्रभावित हुआ है, वहीं प्रकृति के लिए वरदान से कम नहीं। पूरी दुनिया जिस पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा हेतु बड़ी-बड़ी संगोष्ठियाँ और कार्य योजनाएं बनाती रही, वैश्विक चिन्तन होता रहा, परन्तु खास परिणाम देखने को नहीं मिला, वहीं यह काम एक वायरस की बदौलत हुए विश्वव्यापी लॉकडाउन ने कर दिखाया। कोरोना काल के चलते एक बार फिर से आसमान में ध्रुव तारे समेत तमाम ग्रह आसानी से देखे जा रहे हैं। दशकों से नदियों को साफ करने की मुहिम बिना किसी प्रयास के रंग लाती दिखी। इंसानियत पर भारी कोरोना ने बड़ी सीख और ज्ञान दिया कि सारी मानवीय गतिविधियों के ठप होने पर प्रदूषण से लगातार राहत मिली। मनुष्य जब तक, प्रकृति के साथ किए गए वादे को पूरा करता रहा, तब तक, सुखी एवं सम्पन्न रहा, परन्तु जैसे ही इसने अतिक्रमण शुरू किया, प्रकृति ने भी अपना विध्वंसक एवं विघटनकारी रूप दिखाना प्रारम्भ किया। हालात ऐसे बने कि मानव अपने-अपने घरों में कैद हो गया और प्रकृति स्वच्छ एवं स्वच्छंद होकर विचरण कर रही है। यह प्रकृति के साथ छेड़छाड़ और अमानवीय व्यवहार का परिणाम है। वायरस से होने वाली अधिकतर बीमारियां वन्य जीवों से आई हैं। क्योंकि धरती पर जीवन का आरम्भ व जीवन चलाने का काम प्रकृति की बड़ी पेचिदा प्रक्रिया है। प्रकृति का मनुष्य जीवन में इतना महत्व होते हुए अपने लालच में मानव ने इसका संतुलन बिगाड़ दिया। वनस्पति से लेकर जीवाणुओं, कीड़े-मकोड़ों इत्यादि तक का प्रकृति में अपना-अपना योगदान रहा है। अमेरिका की 'हार्वर्ड यूनिवर्सिटी' का शोध बताता है कि अगर कोई गम्भीर रूप से वायु प्रदूषित इलाके में रहता है तो वह कोरोना से संक्रमित होता है उसकी मौत की आशंका में 15 फीसदी इजाफा हो जाता है। प्रकृतिविदों का मानना है कि पर्यावरण अपना इलाज स्वयं कर रहा है। जब ये अपने आपको स्वच्छ कर लेगा, तभी प्राणियों को भी स्वस्थ रखने में सक्षम होगा।<sup>8</sup>

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद से यह पहला अवसर है जब पृथ्वी से जहरीली गैसों का उत्पादन बेहद कम हुआ है। जालंधर से हिमालय पर्वत की शृंखला दिखाई पड़ने लगी। मुंबई के समुद्री तट पर लाखों की संख्या में कछुओं सहित कई अन्य जलचर देखे गए। अब बिना दूरबीन के कोरी आंखों से दिल्ली, मुंबई जैसे महानगरों से सप्तऋषि मण्डल, आकाशीय पिण्डों को निहारा जा सका है।

यह स्पष्ट है कि चीन पर्यावरण से जुड़े अंतर्राष्ट्रीय समझौतों का उल्लंघन करते हुए अपने उद्योग-धंधों में ओजोन परत के लिए घातक गैसों का व्यापक पैमाने पर इस्तेमाल करता रहा है। पृथ्वी पर जीवन के लिए ओजोन परत का बहुत महत्व है, यह परत सूर्य से आने वाली जीव जगत के लिए बेहद घातक पराबैंगनी किरणों (अल्ट्रावायलेट वेक्स) को धरती पर आने से रोकती है। अगर पृथ्वी के चारों ओर यह ओजोन रूपी सुरक्षा छतरी नहीं होती तो शायद अन्य ग्रहों की भांति पृथ्वी भी जीव-विहीन होती। वर्ष 1985 में वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के दक्षिणी ध्रुव (अंटार्कटिका) के ऊपर ओजोन की परत में एक विशालकाय सुराख (ओजोन होल) देखा जो प्रतिवर्ष बड़ा होता जा रहा है, कोरोना काल में औद्योगिक गतिविधियों के बंद होने के कारण ओजोन परत में सुधार देखा गया। भू वैज्ञानिकों की मान्यता है कि कोरोना में लॉकडाउन के चलते 24 घंटे होने वाली गतिविधियां बंद हुईं, इसी कारण बहुत छोटे-छोटे भूकम्प को मापने में सफल सिद्ध हुए हैं।<sup>9</sup>

इतिहास गवाह है कि अतीत में जब-जब इस प्रकार की भयानक महामारी आई है तब-तब पर्यावरण ने सकारात्मक करवट ली है। सत्य है कि कोरोना संक्रमण काल प्रकृति के लिए ही नहीं, मानव के लिए भी क्षणिक राहत वाला है। परन्तु पर्यावरण का यह अल्पकालीन सुधार न तो स्थायी समाधान है और न ही वांछनीय परिणाम। वर्तमान स्थिति को प्रकृति की ओर से दी जाने वाली चेतावनी समझनी होगी जो मनुष्य की जीवन-शैली और विकास प्रक्रिया के तौर-तरीकों को बदलने का अवसर प्रदान करती है बल्कि मानव, प्रकृति और आर्थिक विकास के अंतर्सम्बन्धों को नए सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता है।<sup>10</sup>

ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या इस महामारी को झेलने के पश्चात् प्रकृति, जीवनशैली और विकास के प्रति अपने रूख में बदलाव ला सकेंगे, क्या विकास के साथ प्रकृति की पीड़ा को भी ध्यान रखेंगे, क्या विकास की सीमा तय करेंगे, जिसमें हवा, पानी, मिट्टी, जंगल भी जुड़े होंगे। सारी दुनिया एक साथ खड़ी होकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना के साथ इस महामारी का सामना कर रही है। यही भावना और इच्छाशक्ति हमें अपने पर्यावरण को बचाने में दिखानी होगी। इस दौर में कोरोना महामारी की तालाबंदी प्रकृति के लिए वरदान सिद्ध हुई।<sup>11</sup> इन तमाम प्रयासों, नवाचारों, पारदर्शी इच्छाशक्ति के सहारे ही, देश दुनिया में नदी, पहाड़, पानी, वनों की रक्षा के संकल्प पर अमल कर सकेंगे। तभी विश्व में लगभग समाप्ति की ओर 10 लाख पेड़-पौधे, वन्य जीवों की प्रजातियों का निवेश सम्भव है।

### 3.0 निष्कर्ष:

मानवीय जीवन का रहस्य प्रकृति के गर्भ में समाहित है। गालिब का प्रसिद्ध शेर है कि—

न था कुछ तो खुदा था, कुछ न होता तो खुदा होता,  
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता?<sup>12</sup>

जन्म और मृत्यु का विषय अत्यन्त पुराना होते हुए भी नवीन है। पृथ्वी पर आदमी जाति के आने से पहले अन्य छोटे-छोटे जीव थे। जीवित और अजीवित पदार्थों वाले दो समुदाय हैं। (प्राणी जगत और वनस्पति जगत) जिसने पृथ्वी पर जीवन का प्रारम्भ किया। परन्तु सोच-विचार और मनन-चिंतन का काम 'अमीबा का आदमी' वाली उक्ति के अनुसार 'आदमी' नाम का विकसित प्राणी अस्तित्व में आया और जिसका दिमाग भी अन्य जानवरों के मुकाबले अधिक विकसित हुआ।<sup>13</sup> यही विकसित स्वरूप मानव द्वारा जीवन में विलासिता के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु, प्रकृति के साथ व्यापक छेड़छाड़ के क्रियाकलापों ने प्राकृतिक संतुलन को नष्ट कर दिया, जिससे प्राकृतिक व्यवस्था पर संकट उत्पन्न हो गया। इतिहास ऐसे कई उदाहरणों से भरा पड़ा है जो यह साबित करता है कि प्राकृतिक संसाधनों का बड़े पैमाने पर अमर्यादित दोहन किया गया है। अतः वर्तमान में पर्यावरण की स्थिति पर मानव को बुद्धिमान-विवेकी व मर्यादित होकर बिगड़ते पर्यावरण हालातों के प्रति कड़ा रूख अपनाना होगा। पर्यावरण को संकीर्णता की भावना से मुक्त कर, सही दिशा में एकजुट होकर कदम बढ़ाने होंगे। जिस पर्यावरण से हमारा जीवन चलायमान है, जिन जीव-जातियों से हमारा शरीर रचित है उनके प्रति हमारी भावना पवित्र और निश्चल होनी चाहिए। जितना हमने प्रकृति से इस्तेमाल किया है उससे अधिक भरने-पूरने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए, तभी पर्यावरण की सुरक्षा और हमारा कल्याण हो सकता है। जब भी पर्यावरण पर चर्चा होगी गुरु जम्भेश्वर जी के विचार स्मरणीय रहेंगे जिन्होंने सहजता से स्वच्छ वातावरण में जीवन जीने की कला सिखाई है व प्रकृति के प्रत्येक अंग की सीमा का यथोचित पालन किया है।

### 4.0 सन्दर्भ :

1. डॉ. कमला वशिष्ठ, पर्यावरण शिक्षण, पृ.सं. 14
2. <https://gyanapp.in>hindi>
3. अमित कुमार, Environmental studies पर्यावरण अध्ययन, पृ.सं. 14
4. अमित कुमार, पर्यावरण अध्ययन, पृ.सं. 8
5. वी.के. शर्मा, पर्यावरण की चुनौतियां: समस्याएं तथा समाधान, पृ.सं. 26
6. मनोहर पाण्डे, सामान्य ज्ञान 2019, पृ.सं. 181
7. दैनिक जागरण, हिसार, 13 अप्रैल, 2020
8. वही, .....
9. प्रदीप, हिन्दी News18.com, पर्यावरण व पारिस्थितिकी तंत्र के लिए वरदान बना कोरोना, 18 अप्रैल, 2020
10. Monika Minal, M.जागरण.com, 4 May 2020, COVID-19, महामारी के कारण पर्यावरण में देखने को मिल रहा सकारात्मक बदलाव।
11. डॉ. अनिल प्रकाश जोशी, संस्थापक- हिमालयन एनवायरनमेंटल स्टडीज एण्ड कंजर्वेशन, ऑर्गेनाइजेशन।
12. प्रेमानन्द चन्दोला, पर्यावरण और जीव, पृ.सं. 18, 20
13. वही, .....